eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत

[1]डॉ0 अमिता रानी सिंह
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

सुमित्रानंदन पंत आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक युग प्रवर्तक कवि हैं। उन्होंने भाषा को निखार और संस्कार देने उसकी सामर्थ्य को उद्घाटित करने के अतिरिक्त नवीन विचार व भावो की समृद्धि दी। पंत सदा ही अत्यंत सशक्त और ऊर्जावान कवि रहे हैं। वह मुख्यतः भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आदर्शवादिता से अनुप्राणिक थे। इनको मुख्यतः प्रकृति का सुकुमार कवि माना जाने लगा लेकिन वास्तव में पंत मानव सौन्दर्य और आध्यात्मिक चेतना के कुशल कवि थे।

मुख्य शब्द– हिन्दी काव्य, प्रकृति, सुकुमार कवि, युग प्रवर्तक कवि, सुमित्रानन्दन पंत, मानव सौन्दर्य और आध्यात्मिक चेतना ।

Introduction

मन को विराट की आत्मा से कर सर्वयुक्त, तुम प्यार करो सुन्दरता से रहना सीखो
जो अपने ही में पूर्ण स्वयं है, लक्ष्य स्वयं, कवि, यहीं महत्तर ध्येय मनुज के जीवन का
–सुमित्रानन्दन पंत

हिन्दी की नवीन काव्यधारा का प्रारम्भ छायावादी कविता से होता है। हिन्दी छायावादी काव्य के प्रारम्भ और प्रवर्तन का श्रेय तो प्रसाद जी को ही है, किन्तु छायावादी रचना–शैली एवं अनुभूति का सर्वाधिक प्रसार पंत द्वारा ही हुआ, पंत जी ने एक विशेष परिस्थिति में काव्य–साधना प्रारम्भ की थी। उस समय काव्य क्षेत्र में जागृति के लिये कुलबुलाहट हो रही थी। इसी समय प्रसाद जी और कुछ समय उपरान्त कविवर निराला और पंत जी ने इस जागृति का मंत्र फूंका–जागृति से मेरा अभिप्राय राष्ट्रीय जागृति में नहीं, अपितु शुद्ध साहित्यिक जागृति से है। मेरे इस कथन से कविवर हरिऔध और मैथिलीशरण गुप्त के प्रति अन्याय की कोई संभावना नहीं। वास्तव में उन्होंने इस क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन और प्रवर्तन कर दिया था परन्तु उनके आदर्श प्राचीन ही थे। हिन्दी के रोमांटिक युग के सूत्रधार यही कवि–त्रय हैं। इन उदीयमान युवक कवियों ने सबसे पहला कार्य यह किया कि वे हिन्दी–कविता को मानसिक अकर्तव्य की उलझन से निकाल कर हृदय की चिर–उर्वरा भूमि में ले आए, आत्म–व्यंजना की पुकार करने वाले ये प्रथम कवि थे।

ऊषा की छवि में विश्व–कामिनी की मुस्कान, तारों में जीवन के लेख, और चांदनी में रात्रि का अभिसार सबसे पहले इन्हीं कवियों ने देखा, प्रकृति के स्पंदन से अपने हृदय के स्पंदनों का स्वर मिलाया। विकास के साथ तीनों के व्यक्तित्व स्वाभावानुसार तीन पृथक धाराओं में वह निकले। प्रसाद का क्षेत्र हृदय–प्रेम, निराला का दार्शनिक भाव–जगत् और पंत जी का प्रकृति और मानव का सम्पर्क

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

तथा कला–क्षेत्र पर प्रभुत्व हुआ उन्होंने हिन्दी कविता–धारा को एक रूढ़ि से हटाकर एक नवीन दिशा की ओर प्रवाहित किया। उन्होंने ही वास्तविक गीत–काव्य की कला का विकास किया।

पंत जी मननशील, चितंनशील कवि हैं। वे अपने सभी भावों को, सभी विचारों और अनुभवों को चिंतन के ताप में गलाकर ऐसा एकसार और तरल बना लेते हैं कि वे बिना प्रयास के ही भाषा में वह निकले हैं। डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में–''सुमित्रानन्दन पंत का सम्पूर्ण व्यक्तित्व गीतिमय है। वे मूलतः गीतिकाव्य के कवि हैं। वे बराबर आगे बढ़ते गये हैं। उनका दृष्टिकोण बराबर सांस्कृतिक सामूहिक उत्थान का रहा है। उनके विकास के तीन उत्थान हैं। प्रथम में वे छायावादी कवि है, दूसरे में वे समाजवादी आदर्शो से चालित है और तीसरे में आध्यात्मिक। तीनों ही अवस्था में पंत जी वैयक्तिकतावादी हैं। जिन दिनों समाजवादी सिद्धान्तों से वे आकृष्ट हुए थे उन दिनों भी वे अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से सबसे अलग समझते थे। छायावाद का महान आन्दोलन पंत के समान नेता पाने के कारण ही तेजी से लोकप्रिय हो गया।(1)

पंत जी सुकुमार एवं कोमल कल्पना के कवि हैं। 'उच्छवास' से लेकर 'गुंजन' तक की कविता का सम्पूर्ण भावपट कवि की सौन्दर्य–चेतना का काल है। सौन्दर्य–सृष्टि के उनके प्रयत्न के मुख्य उपादान हैं– प्रकृति प्रेम और आत्म–उद्बोधन, अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा ने उन्हें बचपन से ही अपनी ओर आकृष्ट किया। ऐसा प्रतीत होता है जैसे मॉ की ममता से रहित उनके जीवन में मानो प्रकृति ही उनकी माँ हो, पर्वतीय अंचल की गोद में पले बड़े पंत जी स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि उस मनोरम वातावरण का इनके व्यक्तित्व पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। कवि या कलाकार कहॉ से प्रेरणा ग्रहण करता है इस बारे में स्वयं पंत जी ने लिखा कि संभवतः प्रेरणा के स्त्रोत भीतर न होकर अधिकतर बाहर ही रहते हैं। अपनी सम्पूर्ण काव्य यात्रा में पंत जी केवल सौन्दर्य को ही खोजते नजर आते हैं।

कविवर पंत प्रकृति और प्रेम के उपादानों से एक अत्यन्त सूक्ष्म और हृदयकारी सौन्दर्य की सृष्टि करते हैं किन्तु उनके शब्द केवल प्रकृति वर्णन के अंग न होकर एक दूसरे अर्थ की गहरी व्यंजना को संयोजित हैं। उनकी रचनाओं पर शैली, कीट्स, टेनिसन आदि पाश्चात्य कवियों का प्रभाव है। कविवर पंत के अनुसार मेरे मूक कवि को बाहर लाने का सर्वाधिक श्रेय मेरी जन्म भूमि के उस नैसर्गिक सौन्दर्य को है जिसकी गोद में पलकर मैं बड़ा हुआ, जिसने छुटपन से ही मुझे अपने रूपहले एकांत में एकाग्र, तन्मयता के रश्मिदोलन में झुलाया रिझाया तथा कोमल कंठ वन–पखियों के साथ बोलना, कुहुकन सिखाया। कविवर पंत ने लिखा भी है कि – कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति से ही मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्म भूमि कूर्माचल प्रदेश को है। कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है, मैं घंटों एकान्त में बैठा प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर एक अव्यक्त सौन्दर्य का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था, जब कभी मैं आँखें मूँदकर लेटता था तो वह दृश्यपट चुपचाप मेरी आँखों के सामने घूमा करता था।(2)

पंत ने अपनी प्रारम्भिक कविताओं में प्रकृति के चिर सुन्दर, चिर सुकुमार एवं चिर सचेतन रूप के सुन्दर–सुन्दर चित्र अंकित करके खड़ी बोली कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्रण की एक अद्भुत

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

एवं नूतन प्रणाली का भी श्रीगणेश किया। एक प्रकृति के प्रति एक नूतन आकर्षण जागृत करके हिन्दी के कवियों को प्रकृति–माधुरी के रमणीय चित्र अंकित करने के लिये प्रेरित किया। डा0 नगेन्द्र के शब्दों में– प्रकृति विषयक उनका दृष्टिकोण न तो ''शैली'' की भांति सर्वथा मानसिक ही है न 'वर्डसवर्थ' की तरह आध्यात्मिक ही, और न ही 'कीट्स' के सदृश्य ऐन्द्रिय ही हो सकता है।''(3) कवि ने प्रकृति के ताने–बाने में मानव–आत्मा का रूप–रंग भरकर उसका अपूर्व अंकन किया है प्रकृति पंत की चिरसंगिनी है, उनकी आत्मा उसमें तदाकर हो गयी है। पंत जी के काव्य में हमें प्रकृति चित्रण विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है–

आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण :–

प्रायः प्रकृति कवियों की भावनाओं से रंजित दिखाई गयी है किन्तु आचार्य शुक्ल प्रकृति के आलम्बन पक्ष के बड़े हामी थे, आलम्बन के क्षेत्र में पंत जी ने यथातथ्यात्मक प्रकृति चित्रण को अत्यधिक प्रोत्साहित किया। 'बादल', 'आँसू', 'वसन्त श्री', 'परिवर्तन', 'गुजंन', 'एकतारा', 'नौका बिहार', 'हिमाद्रि' आदि कविताओं में प्रकृति के बने अनूठे चित्र प्रस्तुत किये – '

'बादलों के छायामय मेल, घूमते हैं आँखों में फैल।
अवनि औ अम्बर के वे खेल, शैल में जलद, जलद में शैल
शिखर पर विचर मरूत रखवाल, वेणु में भरता था जब स्वर''

– आँसू–पल्लव

पंत जी ने परिगणात्मक शैली में भी प्रकृति चित्रण किया 'ग्रामश्री' की निम्नांकित पंक्तियों में प्रकृति का कोई संश्लिष्ट प्रभाव सामने न आकर विविध फलों और तरकारियों के नाम भर आते हैं–

मँहके कटहल, मुकुलित जामुन, जंगंल में झरबेरी फूली।
फूले आड़ू, नीबू, दाड़िम, आलू गोभी, बैगन, मूली।
मखमली टमाटर हुए लाल, मिरचों की बड़ी हरी थैली

– ग्रामश्री–ग्राम्या

उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण :–

शुद्ध रूप ने प्रकृति को निहारने वाले कवि पंत को भी प्रकृति के उद्दीपक रूप में मंत्र मुग्ध किया है। उद्दीपन रूप में प्रकृति मानवीय भावनाओं को उद्दीपत करती दिखाई पड़ती है। प्रकृति सुख और दुख संयोग और वियोग दोनों ही स्थितियों में मानवीय भावनाओं को उद्दीपत करती है–

प्रिय! चल अनि दल से वाचाल।
आज मुकुलित कुसुमित सब ओर,
तुम्हारी छवि को छटा अपार।
फिर रहे उन्मद मधु प्रिय भौंर,
नयन पलकों के पंख पसार।

– मधुवन – पल्लविनि

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

अलंकार रूप में प्रकृति चित्रण :–

पंत जी ने विविध अलंकारों की योजना के लिये प्रकृति से उपकरणों का चयन किया। प्राचीन कवियों ने जहॉ कमल के मुख की सुषमा, नेत्रों में उत्पलों की सुषमा, कुंचित पलकों में मघुपों की पंक्तियाँ देखी हैं, वहीं कवि पंत ने आलंकारिक प्रकृति चित्रण में प्रकृति से नवीन उपमान जुटाये हैं–

''मेरा पावस ऋतु सा जीवन,
मानस–सा उमड़ा अपार मन।
गहरे धुँधले, धुले साँवले,
मेघों से मेरे भरे नयन।
– आँसू – पल्लव

उपदेशात्मक रूप में प्रकृति चित्रण – पंज जी ने प्रकृति को सहिष्णुताका अवतार माना है, जो कि दिन भर रोंदी जाने पर भी टस से मस नहीं होती। प्रकृति के इस स्वभाव से मानव को उपदेश ग्रहण करना चाहिए – 'लहर' और 'प्रसून' के विषय में पंत जी कहते हैं –

हँसमुख प्रसून सिखलाते
पल भर ही जो हँस पाओ,
अपने उर के सौरभ से,
जग का आँगन भर जाओ,
उठ–उठ लहरें कहती यह,
हम कूल विलोक न पावें,
पर इस उमंग में बह–बह,
नित आगे बढ़ती जावें
–गाता खग पंत

प्रकृति कभी पंत जी को नक्षत्रों के रूप में 'मौन नियंत्रण' देती है :– पंत जी ने प्रकृति को अव्यक्त सत्ता के रूप में देखा है। कभी लहरों के रूप में हाथ उठाकर अपनी ओर बुलाती है, कभी जुगनुओं के रूप में पथ दिखलाती है, और कभी स्वप्न के माध्यम से छाया–जगत में विचरण कराती है–

देख वसुधा का यौवन–भार,
गूँज उठता है जब मधुमास।
विधुर–उर के से मृदु–उद्‌गार
कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छवास,
न जाने सौरभ के मिस कौन,
संदेशा मुझे भेजता मौन।
–मौन निमंत्रण–पंत

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

मानवीकरण रूप में प्रकृति चित्रण :–

प्रकृति का मानवीकरण छायावादी कविता की मुख्य विशेषता है, पंत जी की छाया, बादल, मधुकरी, संध्या तारा, नौका विहार आदि कविताएँ मानवीकरण के रूप में प्रकृति चित्रण के सुन्दर उदाहरण हैं–

सैकत शैय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रान्त क्लान्त निश्चल
वापस–बाला गंगा निर्मल, शशि–मुख से दीपित मृदु करतल
लहरें ऊपर कोमल कुन्तल
–नौका विहार – पंत

दार्शनिक रूप में प्रकृति चित्रण :– पंत जी के काव्य में दार्शनिकता की छाप बहुत गहरी है। इन्होंने अपनी अनेक कविताओं में जीवन के मूल में निहित आत्म–तत्व की व्याख्या करने का सुन्दर प्रयास किया है। नौका–विहार से एक उदाहरण दृष्टव्य है –

इस धारा–सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम्
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम।
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत हास
शाश्वत लघु लहरों का विकास।
हे जग–जीवन के कर्णधार! चिर जन्म मरण के आर–पार
शाश्वत जीवन नौका–विहार।
– नौका–विहार पंत

वातावरण निर्माण के रूप में प्रकृति चित्रण :– प्रकृति चित्रण वातावरण को उपस्थित करने में सहायक होता है। जहॉ पर गम्भीर वातावरण की आवश्यकता होती है वहॉ कवि प्रकृति को गम्भीर रूप में और जहॉ उल्लासपूर्ण वातावरण पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करना होता है वहॉ प्रकृति को आनन्द एवं उल्लासपूर्ण वातावरण पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करना होता है। प्रकृति के अत्यन्त गम्भीर वातावरण का एक दृश्य इस प्रकार है–

''सिमटा पंख सांझ की लाली,
जा बैठी जब तक शिखरों पर।
ताम्रपर्ण पीपल से शतमुख,
झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर।
– संध्या के बाद – पंत

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

दूती के रूप में प्रकृति चित्रण :– काव्य में प्रकृति को दूती या दूत रूप में प्रस्तुत करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। हरिऔध के 'प्रिय प्रवास' की पवन दूती, कालिदास का मेघदूत इस प्रकार के प्रकृति–चित्रण के अन्यतम उदाहरण हैं –

सुरपति के हम ही हैं अनुचर जगत्प्राण के भी सहचर,
मेघदूत की सजल कल्पना, चातक के चिर जीवनघर
– बादल कविता – पंत

प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति चित्रण :– प्रकृति के विभिन्न उपकरण विविध भाव रूपों एवं क्रियाओं के प्रतीक बनकर आधुनिक कविताओं में चित्रित हुए हैं। पंत जी ने प्रकृति का प्रतीकात्मक रूप में चित्रण किया है। पंत जी की 'परिवर्तन' शीर्षक कविता में अनेक प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत उदाहरण में सुकुमार वात–हत लतिका को सुकुमार नवयुवती का प्रतीक बनाकर मनोमुग्धकारी शैली में चित्रित किया है–

अभी तो मुकुट बँधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खुले भी न थे लाज के बोल,
खिले भी चुंबन शून्य कपोल।
हाय रूक गया वहीं संसार,
बना सिंदूर अँगार।
वात–हत लतिका वह सुकुमार,
पड़ी है छिन्नाधार।
– परिवर्तन – पंत

लोक–शिक्षा के रूप में प्रकृति चित्रण :– काव्य में बहुधा प्रकृति का उपयोग उपदेशात्मक रूप में ही हुआ है। पंत की 'परिवर्तन' शीर्षक कविता में सर्वाधिक लोक शिक्षा समाहित है। 'पतझर' शीर्षक कविता में पुराने पत्तों के निरन्तर झड़ने तथा नूतन किसलयों के आगमन की बात कहकर संसार के चिर आवागमन का अथवा आत्मा की अमरता का सुन्दर संदेश दिया गया है–

झरो, झरो, झरो।
जगंम जग अगंण में, जीवन संघर्षण में।
नव युग परिवर्तन में, मन के पीले पत्तों!
झरो, झरो, झरो।
– 'पतझर– पंत

निष्कर्षतः पंत जी के साहित्य का उद्देश्य जनता को प्रकृति के प्रति प्रेम को बढ़ाना, मानवता को स्थापित करना तथा मन की वृत्तियों का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करना था। पंत की कविताओं में –

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

कहीं झिंगुरों की झीनी झंकार, कहीं पपीहे की पुकार, निर्झर का झर–झर, हवा का सर–सर, शैशव की मुस्कान, इन्द्रधनुष की टंकार, झंझा की चपल झंकार है।''

''वीणा' प्रकृति का रम्य प्रांगण है। 'ग्रंथि में प्रकृति संवेदनात्मक रूप धारण करती है। 'पल्लव' में प्रकृति का विस्तृत चित्र–फलक मिलता है। 'परिवर्तन' शीर्षक कविता में पंत की दृष्टि प्रकृति के कठोर रूप पर भी जाती है। 'एक तारा' और ''नौका –विहार'' में दार्शनिक और अध्यात्मिक चिंतन की धारा दिखाई पड़ती है। 'युगांत' 'युग–वाणी' ग्राम्या में पंत प्रकृति की यथार्थ भूमि पर आ जाते हैं। 'झंसा में नीम' जैसे सामान्य प्राकृतिक विषयों पर भी उनकी दृष्टि जाती है। विश्म्भर नाथ 'मानव' के शब्दों में – पंत जी ने प्रकृति की एक–एक वस्तु में चेतना पहचानी है। प्रकृति का उन्होंने शरीर ही नहीं देखा, मन भी देखा है और देखी है उसके मन की भावनाएँ भी। सरिता, सुमन, नक्षत्र, बादल आदि के सम्पर्क में वे आते हैं, तो उसका रूप निहारने की अपेक्षा उन्हें उसके हृदय की बात सुनना अधिक भाता है।'' (4)

इस प्रकार निःसंकोच कहा जा सकता है कि हिन्दी के काव्य क्षेत्र में विश्व–मोहिनी प्रकृति–सुन्दरी के सचेतन, सुकुमार एवं सहज सौन्दर्यशाली रूप का जितना मर्मस्पर्शी चित्रण पंत जी की रचना में मिलता है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं परिलक्षित होता। उन्होंने अपने सभी भाव चित्रों की साज–सज्जा उन्मुक्त प्रकृति के सहज कुमार उपकरणों एवं रंगों से की है। अन्त में अपनी बात डॉ0 नगेन्द्र के शब्दों से समाप्त करती हूँ – ''कवि ने प्रकृति के ताने–बाने में मानव आत्मा का रूप रंग भरकर उसका अपूर्व अंकन किया है। प्रकृति पंत की चिर–सहचरी है– उनकी आत्मा उसमें एकाकार सी हो गई है।'' (5) प्रकृति के सुकुमार व कोमल भावना के कवि कविवर पंत को मेरा शत–शत नमन।

संदर्भ ग्रंथ :–

1– रश्मिबंध और सुमित्रानंदन पंत – डा0 पारसनाथ तिवारी प्रकाशन केन्द्र लखनऊ।
2– रश्मिबंध और सुमित्रानंदन पंत – डा0 पारसनाथ तिवारी प्रकाशन केन्द्र लखनऊ पृष्ठ–26
3– इंटरनेट http//www.questionmug.com
4– रश्मिबंध और सुमित्रानंदन पंत – डा0 पारसनाथ तिवारी प्रकाशन केन्द्र लखनऊ पृष्ठ –33
5– रश्मिबंध और सुमित्रानंदन पंत – डा0 पारसनाथ तिवारी प्रकाशन केन्द्र लखनऊ पृष्ठ –34